बी ए (प्रोग्राम) द्वितीय वर्ष, सेमेस्टर- 4, भाषायी दक्षता, Code- 62053407

के चार स्तर हैं - वाक्य, रूप, ध्वनि और अर्थ। डॉ भोलानाथ तिवारी के अनुसार प्रोक्ति स्तर, व्याकरणिक स्तर, ध्वनि स्तर और अर्थ स्तर हैं, इस प्रकार भाषा संरचना की चर्चा - अर्थ, प्रोक्ति, वाक्य, रूप शब्द तथा ध्वनि के स्तर पर की जा सकती है -

(1) अर्थ स्तर - भाषा- अध्ययन का केन्द्रबिंदु अर्थ है। शब्द हो चाहे प्रोक्ति, सभी अर्थ प्रदान करके ही महत्त्व पाते हैं, शब्द और अर्थ को अलग करना भी संभव नहीं है। अर्थ मुख्यत: निम्न प्रकार के होते हैं-

(क) संकेतार्थ - इस अर्थ का आधार विचार होता है, किसी शब्द, जैसे कमल, पुस्तक, गाय आदि को सुनकर हमारे मन में जो संकल्पना उभरती है उसे ही हम संकेतार्थ कहते हैं।

(ख) संरचनार्थ - इसे व्याकरणिक अर्थ भी कहा जाता है। इस अर्थ का ज्ञान हमें शब्द अथवा वाक्य आदि की संरचना के माध्यम से होता है, एक ही विचार को हम अलग- अलग भाषिक संरचनाओं के माध्यम से प्रकट करते हैं। जैसे कमल के पर्यायवाची जलज और पंकज भी हैं, परन्तु संरचना की दृष्टि से अर्थ अलग है। जलज और पंकज, कमल तो है पर जल|पंक (कीचड़) से उत्पन्न होने वाले भी हैं। कर्तवाच्य और कर्मवाच्य के उदाहरण से वाक्य के स्तर पर भी इस भेद को समझा जा सकता है। 'लड़के ने खाना खाया' (कर्तृ) में बल लड़के (कर्ता) पर है, तो लड़के द्वारा खाना खाया गया (कर्म) में बल 'खाना' पर है। इस प्रकार भाषायी दक्षता के निर्माण के लिए हमें संरचना के आधार पर भी भाषा को जानना पड़ता है।

(ग) प्रयोगार्थ - भाषायी कौशल के निर्माण में भाषा के अलग-अलग प्रयोग से मिलने वाले अर्थ को समझने पर भी निर्भर करती है। उदाहरणार्थ, 'तू खाना खा' और 'आप खाना खाइए'; इन दोनों वाक्यों का प्रयोग समान भाव के लिए हुआ है, परन्तु सामाजिक अर्थ की दृष्टि से देखते है कि पहले वाक्य में वक्ता श्रोता से पद में बड़ा है अथवा श्रोता